साहित्य विभाग

संस्कृत और संस्कृति के समुन्नयन एवं समाराधना की आधारस्थली साहित्य शास्त्र के अध्ययन के बाद विद्यार्थियों में विभिन्न मूल्यों का आधान होता है, यह सर्वविदित ही है। रामायण, महाभारत, रघुवंश, कादम्बरी, मृच्छकटिक, शिशुपालवध जैसे महाकाव्यों के अध्येता विद्यार्थियों में सहज ही वैश्विक, सामाजिक, साहित्यिक व राजनैतिक चेतना जागृत होती है। तमिल, फारसी, अरबी, लैटिन, ग्रीक एवं चीनी भाषा के प्राचीन साहित्यों में प्रतिबिम्बित मानवीय मूल्यों के साथ भारतीय भाषाओं विशेषकर संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठापित मूल्यों का आधुनिक वैश्विक पटल पर सांदर्भिकता के साथ वर्तमान समाज के लिए अपेक्षित मार्गनिर्देशन हेतु काव्यचिन्तन की दिशा में निरन्तर शोध हो रहे हैं।

साहित्य के अध्ययन से अच्छे और बुरे के ज्ञान हेतु नीरक्षीर विवेक की अभूतपूर्व क्षमता विकसित होती है, जो आज के युग में नितान्त अपेक्षित है। साहित्य से समाज को दिशा देने में संस्कृत के साहित्यकारों एवं साहित्यिक आलोचकों की विश्वसाहित्य पटल पर अपनी स्वतंत्र छवि है।

साहित्य संस्कृति संकायान्तर्गत प्रतिष्ठापित साहित्य विभाग में छात्रों के ज्ञान में बहुमुखी अभिवृद्धि हेतु विभागीय आचार्यों द्वारा विशेष अभिस्थापन (indentation) के कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्रों को विशेष मार्गदर्शन हेतु नियमित कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। विभाग में भाषा के तात्त्विक ज्ञान हेतु भाषा प्रयोगशाला (Language Lab) स्थापित करने की योजना प्रस्तावित है। साहित्य, पुराण-इतिहास, नाट्यशास्त्र आदि के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध हेतु साहित्य विभाग कार्यरत है। शैक्षणिक सत्र 2020-21 में अध्यापन कार्य सीबीसीएस पाठ्यक्रम तथा ऑनलाइन के माध्यम से भी कराया जायेगा।

साहित्य विभाग की भावी कार्य योजनाएं

1. संयुक्ताचार्य पाठ्यक्रमानुसार विभाग शिक्षण एवं ज्ञान के विनियोग में सतत् गतिशील रहेगा तथा M.Phil. एवं Ph.D. पाठ्यक्रम द्वारा शोध की प्रवृत्ति एवं गुणवत्ता के अभिवर्धन हेतु प्रतिमाह अतिरिक्त विशेष विश्वविद्यालयस्तरीय शैक्षिक सम्मेलनों का आयोजन करेगा।, 2. साहित्य विभाग संस्कृति एवं संस्कृताधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (UPSC/RPSC/NET-SLET आदि) की तैयारी करने में छात्रों की सहायता हेतु विशेष प्रशिक्षण सुविधा प्रदान करेगा। 3. साहित्य विभाग जन सामान्य के लाभ हेतु रामायण/महाभारत/गीता आदि विषयों पर ई-पाठ्यक्रम का प्रारम्भ करेगा। जिसका प्रस्ताव वि.वि. प्रशासन के अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जा चुका है।

आचार्यगण

श्री उमेश नेपाल
विभागाध्यक्ष
9829568913

डॉ. सुभाष शर्मा
सहआचार्य
9782569848

डॉ. स्नेहलता शर्मा
सहायक आचार्य
9352530162

डॉ. मधुबाला शर्मा
सहायक आचार्य
9928014538